

SMT. LENTINA AO THAKKAR

Smt. Lentina Ao Thakkar was born in the year 1933 at Merangkong , a hilltop village inhabited by the Ao Naga tribe of Nagaland. The village was then governed by the special administration evolved by the then, British regime. Every village then was a compact fortified unit. There were then, no roads, no schools, no water supply and no medicinal facilities.

2. One important development in case of Smt. Thakkar took place when she was a grown up girl. She entered the government school at the village along with two other girls. Out of these girls, she alone reached upto class two. She then shifted to Chuchuyimlang where one of her elder brothers was serving as an Assamese teacher in the middle school there. She studied at Chuchuyimlang up to class six and then entered in class seven at the high school in Mokokchung. The distance between her village, Merangkong and Mokokchung is 60 K.M. She with her 3 brothers used to take turns to carry rations periodically to and from Mokokchung on foot. It was a strenuous operation.

3. A new turn in Smt. Thakkar's life took place as her school teacher brother could arrange to admit her in 1951 at the Gram Sevika Vidyalaya run by the Assam Branch of the Kasturba Gandhi Memorial Trust at Guwahati. As this organization is located on the Sarania Hill, it is popularly known as Sarania Ashram. Here she received her training as Gram Sevika for two years and as midwife at The Government Civil Hospital for another 2 years.

4. Having completed her training at Sarania Ashram, Smt. Thakkar returned to Naga Hills in 1955 where she was posted as one of the Gram Sevikas at the proposed Kasturba Gram Seva Kendra at Chuchuyimlang. Naga Hills then was a district under the state of Assam. It was politically disturbed then which underwent violent situation by the end of the year. Kasturba Gram Seva Kendra At Chuchuyimlang came to Chuchuyimlang, one month after Nagaland Gandhi Ashram founded by Shri Natwar Thakkar under the auspices of Bharatiya Adimjati Sevak Sevak Sangha. 3 Gram Sevikas then staffed the Kasturba Kendra. Smt. Thakkar was the junior Sevika of the Kendra.

5. Apart from helping activities of the Kendra such as spinning, weaving and in helping to run the Balwadi, Smt. Thakkar being a trained midwife had to attend to pregnant women at Chuchuyimlang village and in other far flung villages in the area. This service was highly valued and appreciated by the villagers. In a recent interview given by her, Smt. Thakkar said, “Now when I see the babies delivered by me become grand parents, it is my greatest reward”. Due to the difficulties of different kinds faced by the Kasturba Kendra and due to militant environment the two Assamese senior Sevika had to leave. The entire responsibility of running the centre then had to be borne by Smt. Thakkar. She managed the centre alone for many years with the help of a local girl. Another major development in her life was her marriage with Shri Natwar Thakkar of Nagaland in 1956. It was registered under the Special Marriage Act. This added strength to Shri Natwar Thakkar by getting a valuable assistant. The couple has faced blessings and adversities together all these years.

6. Smt. Thakkar also served as a member of Khadi and Village Industries Association (KVIC) in late 80s for two years. She was trained on Gandhian lines and she has silently worked on Gandhian lines all her life. One daily paper published in Nagaland describes her as, “Nagaland's First Gandhian Woman ” in, “Morung Express” of 5/2/2018 and the title odan article on her in the National daily, The Hindu has mentioned her as “A Gandhian in Nagaland”. She has rightly earned these titles.



श्रीमती लेन्टिना आओ ठक्कर

श्रीमती लेन्टिना आओ ठक्कर का जन्म 1983 में नागालैण्ड की आव नागा जनजाति के पहाड़ी गांव मेरांगकोन्ग में हुआ था। तब यह गांव तत्कालीन ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा विकसित विशेष प्रशासन से प्रशासित होता था। उस समय प्रत्येक गांव कॉम्पैक्ट फॉर्टिफाइड यूनिट थी। उस समय वहां न तो सड़कें, स्कूल, जल आपूर्ति उपलब्ध थी और न ही चिकित्सा सुविधाएं।

2. आपके संबंध में महत्वपूर्ण बात यह है कि जब आप काफी बड़ी हो गई तब आपने अन्य दो लड़कियों के साथ गांव के सरकारी स्कूल में प्रवेश लिया था। इन लड़कियों में से केवल आप ही कक्षा दूसरी तक पहुंच पाईं थी। उसके पश्चात आप चूचूयिम्लांग में शिफ्ट हो गईं जहां आपके एक बड़ा भाई माध्यमिक स्कूल में असमिया शिक्षक के रूप में कार्यरत थे। आपने कक्षा छह तक चूचूयिम्लांग में अध्ययन किया और उसके बाद आपने मोकोकचुंग में हाई स्कूल में कक्षा सात में प्रवेश लिया। आपके गांव मेरांगकोंग और मोकोकचुंग में 60 कि.मी. की दूरी है। आप अपने तीन भाईयों के साथ मिलकर मोकोकचुंग से अपने गांव तक बारी-बारी से पैदल ही आवधिक तौर पर राशन लेकर लाया करती थीं। यह बहुत अधिक श्रम साध्य कार्य था।

3. आपके जीवन में नया मोड़ तब आया जब आपके स्कूल शिक्षक भाई गुवाहाटी स्थित कस्तूरबा गांधी मेमोरियल ट्रस्ट की असम शाखा द्वारा संचालित ग्राम सेविका विद्यालय में 1951 में आपका प्रवेश दिलाने में सफल हुए थे। यह संस्था सरनिया पहाड़ी पर स्थित है, इसे सरनिया आश्रम के नाम से भी जाना जाता है। यहां पर आपको ग्राम सेविका के रूप में दो वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ तथा अन्य 2 वर्ष आपको सरकारी सिविल अस्पताल में मिडवाईफ के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त हुआ।

4. सरनिया आश्रम में अपना प्रशिक्षण पूर्ण करने के पश्चात, आप 1955 में नागा पहाड़ियों पर वापस आ गईं, जहां पर आपको चूचूयिम्लांग में प्रस्तावित कस्तूरबा ग्राम सेवा केन्द्र में ग्राम सेवा केन्द्र में ग्राम सेविका के रूप में नियुक्त किया गया था। यह राजनीतिक रूप से उपद्रवित इलाका था तथा वहां उस वर्ष के अंत में हिंसक स्थिति भी उत्पन्न हो गई थी। तब चूचूयिम्लांग का कस्तूरबा ग्राम सेवा केन्द्र भारतीय आदिमजाति सेवक संघ के पावन सानिध्य में श्री नटवर ठक्कर द्वारा नागालैंड गांधी आश्रम की स्थापना के एक वर्ष पश्चात चूचूयिम्लांग में आ गया। उस समय कस्तूरबा केन्द्र में 3 ग्राम सेविकाएं तैनात थीं। आप उस केन्द्र की कनिष्ठ सेविका थीं।

5. बुनाई, कताई और बालवाड़ी संचालन में सहायता करने जैसी केन्द्र की सहायक गतिविधियों के अलावा, आपको प्रशिक्षित मिडवाई चूचूयिम्लांग गांव और उस क्षेत्र के दूर-दराज के अन्य इलाकों में गर्भवती महिलाओं की देखभाल करनी होती थी। ग्रामवासियों ने इस सेवा का मूल्य समझा और आपकी इस सेवा की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। हाल ही में एक साक्षात्कार के दौरान, आपने कहा था कि "जिन बच्चों की मैने डिलीवरी कराई थी, आज वह दादा-दादी, नाना-नानी बन गए हैं, यही मेरा सबसे बड़ा ईनाम है।" कस्तूरबा केन्द्र द्वारा सामना की गई विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों के कारण और उग्रवादी माहौल हो जाने की वजह से दो वरिष्ठ असमिया सेविकाओं को केन्द्र छोड़ना पड़ा था। तब इस केन्द्र के संचालन की संपूर्ण जिम्मेदारी आपके कुशल कंधों पर आ गई थी। आपने एक स्थानीय लड़की की सहायता से कई वर्षों तक अकेले ही केन्द्र का प्रबंधन किया। आपके जीवन का दूसरा महत्वपूर्ण पल 1956 में नागालैण्ड के श्री नटवर ठक्कर के साथ विवाह होना था। यह विवाह विशेष विवाह अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत किया गया था। बहुमूल्य सहायक मिलने की वजह से श्री नटवर ठक्कर की ताकत में वृद्धि हो गई। इस युगल ने इन सभी वर्षों में एक साथ मिलकर सभी सुख और दुख के क्षणों का सामना किया है।

6. आपने 1980 के दशक के अंतिम वर्षों में दो वर्षों के लिए खादी एवं ग्रामोदयोग एसोसिएशन (केवीआईसी) के सदस्य के रूप में भी कार्य किया है। आपका प्रशिक्षण महात्मा गांधी के सिद्धांतों के आधार पर हुआ था और आपने अपने जीवन में सुर्खियों में रहे बिना महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर चलते हुए कार्य किया है। नागालैंड में प्रकाशित होने वाले दिनांक 5/2/2018 के दैनिक समाचार पत्र "मोरन्ग एक्सप्रेस", में आपको "नागालैण्ड की प्रथम गांधीवादी महिला" का नाम दिया गया और राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र 'द हिन्दू' ने भी आपको "ए गांधीयन इन नागालैण्ड" बताया है। आप इन ख्यातियों और उपाधियों की वास्तविक हकदार हैं।